युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

।।ओ३म्।।

।।कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १८ अंक : ०२ १० फरवरी २०१८

प्रजारक्षक आदर्श शूरवीर राजा

छत्रपति शिवाजी महाराज

जयन्ती उत्सव पर शत् शत् नमन !

मंत्रीद्वारा यज्ञ!

परली के वैद्यनाथ महाविद्यालय में नये भवन के उद्घाटन अवसर पर यज्ञ में आहुतियाँ देते हुए ग्रामविकास मन्त्री पंकजा मुंडे। साथ में हैं पुरोहित पं.प्रशांतकुमार शास्त्री व अन्य मान्यवर।

कोल्हापूर का आर्य विद्यालय

राजर्षि शाहू महाराज द्वारा कोल्हापूर में स्थापित आर्य समाज विद्यालय को स्वामी विवेकानंदजी परिव्राजक, स्वामी सांख्यायनजी, सभामंत्री माधवराव देशपांडे आदियों ने भेट दी।

नासिक में प्रवचन..!

आर्य समाज पंचवटी नासिक में आयोजित विशेष समारोह में प्रवचन देते हुए वैदिक विद्वान् आचार्य श्री आर्य नरेशजी।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११८ | कलि संवत् ५११८ | विक्रम संवत् २०७४

दयानन्दाब्द १९४ | माघ/फाल्गुन | १० फरवरी २०१८

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
माधव के.देशपांडे	डॉ.ब्रह्ममुनि	डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९८२२२९५५४५)	(९४२१९५११९०४)	(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक: प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६), प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीय ५
२) जुन्नर परिसर, छत्रपति शिवाजी और म.दयानन्द ७
३) होलिका व प्रह्लाद की वास्तविकता........ ११
४) आर्य समाजों को सूचना १३
५) स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्र गुरुजी) शताब्दी समारोह... १४
६) समाचार दर्पण १५
७) सभा के उपक्रम १६

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १७
२) व्यासंगी आर्य व्यक्तिमत्त्व-पं.उत्तममुनिजी १८
३) स्वामी दयानंदांचा पोवाडा २०
४) माहितीस्तव खुलासा २४
५) वार्ताविशेष २५
६) ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव-सूचना........ २८
७) निधन वार्ता २८

* प्रकाशक *
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध राजा आणि प्रजा..

क्षत्रस्य त्वा परस्पाय ब्रह्मणस्तन्वं पाहि ।

विश्वस्त्वा घर्मणा वयमनु कामाम सुविताय नव्यसे।।

पदार्थान्वय- हे राजन्! वा राणी! आप(**परस्पाय**) जिस कर्म से दूसरों की रक्षा हो, उस के लिए(**क्षत्रस्य**) क्षत्रिय कुल वा राज्य के तथा (**ब्रह्मणः**) वेदवित् ब्राह्मणकुल के सम्बन्धी (**त्वा**) आपके (**तन्वम्**) शरीर की(**पाहि**) रक्षा कीजिये। जैसे (**वयम्**) हम लोग (**नव्यसे**) नवीन(**सुविताय**) ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए(**धर्मणा**) धर्म के साथ (**अनुकामास**)अनुकूल चले, वैसे ही धर्म के साथ वर्तमान (**त्वा**) आपके अनुकूल (**विशः**) प्रजाजन चलें।

भावार्थ - राजा और राजपुरुषों को योग्य है कि धर्म के साथ विद्वानों और प्रजाजनों की रक्षा करें। वैसे ही प्रजा और राजपुरुषों को चाहिये कि राजा की सदैव रक्षा करें। इस प्रकार न्याय तथा विनय के साथ वर्तकर राजा और प्रजा नवीन ऐश्वर्य की उन्नति किया करें।

(यजुर्वेद-३३/८३)

११ मार्च को लातूर में अंतरंग व साधारण बैठक

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग व साधारण सदस्यों को सूचित किया जाता है कि अंतरंग व साधारण बैठकें आगामी रविवार दि.११ मार्च २०१८ को आर्य समाज, गांधी चौक लातूर में निम्नलिखित समयानुसार आयोजित की गयी है।

प्रातः १० बजे - अंतरंग सदस्य बैठक

प्रातः ११.३० बजे - सर्व साधारण सदस्य बैठक

इन बैठकों में नियत विषयों के साथ ही वर्ष २०१६-१७ के ऑडिट रिपोर्ट को मान्यता, वर्ष २०१८-१९ के अनुमानित आय-व्यय को मान्यता, सभा के निर्वाचन की तिथि निश्चित करना,पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी(हरिश्चन्द्र गुरुजी) जन्मशताब्दी समारोह के नियोजन-आयोजन आदि विषयों पर विचारविनिमय होगा। अतः सभी अंतरंग व सर्वसाधारण सदस्य इन बैठकों में उपस्थित रहें।

संपादकीयम् वेद के समर्थन में क्या कोई साथ देगा...?

आधुनिक विज्ञान के चलते पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा निश्चित सिद्धान्तों को अन्तिम सत्य समझना व स्वीकारना और भारतीय प्राचीन ऋषियों व चिन्तकों की शाश्वत विचारधारा को कपोलकल्पित मानकर उसका मजाक उडाना, यह आजकल के शिक्षित, सभ्य व विज्ञानवादी हठधर्मी समाज का स्वभाव सा बन गया है। विभिन्न सम्प्रदायों व मत-मतान्तरों के धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास व पोपलीलाओं को देखकर यदि वैदिक तत्त्वज्ञान के विशुद्ध स्वरूप को ठुकराया जाता हो, तो यह क्या विवेक हुआ? यदि बुद्धिसंगत वैदिक विचारों की गणना भी साम्प्रदायिक पाखण्डपूर्ण विचारों में करने का दुष्प्रयास होता हो, तो यह बुद्धि का दिवाला निकालनेवाली बात होगी। फिर इसी के बहाने अपनी नास्तिकता व भौतिकता की विवेकहीन विचारधारा को नवसमाज के मन-मस्तिष्क पर थोपा जाता हो, तो इसे एक तरह से सोची समझी चाल ही माना जाएगा। सम्प्रदायों की अंध विचारधारा के विरोध की आड में विवेक व विज्ञान का नाम लेकर प्रगतिशील विचारों का समूह खडा करने का यह तो एक षडयंत्र ही है। क्योंकि इसका सबसे बडा आघात वेद-उपनिषद, दर्शन आदि प्राचीन वाङ्मय व वैदिक सिद्धान्तों पर होगा, जिनका ऐतिहासिक सूत्रपात पांच सहस्र वर्षों की घोर तमिस्रा के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने अपनी अनूठी साधना से किया था।

अब इस संकट की घडी में पुरानी, कुरानी, ईसाई, जैनी, बुद्धिस्ट, कम्युनिज्म आदि मतवादियों के साथ ही इन विज्ञानवादियों व प्रगतिशील विचारों के समर्थकों के साथ डटकर खडा रहने की चुनौती महर्षि के सिद्धान्तनिष्ठ अनुयायियों पर है, किन्तु ध्यान रहे कि बदलते परिवेश में आर्य समाज का साथ देनेवाला कोई भी नहीं है। पहले कॉंग्रेस के शासनकाल में और आज मोदी के नेतृत्ववाली संघप्रणित भाजपा के शासन के समय भी आर्य समाज के विश्वकल्याणकारी वेद सिद्धान्तों का समर्थन व संवर्धन करनेवाला कौन है? यह चिन्ता का ही नहीं, बल्कि चिन्तन का विषय है। किन्तु इसके लिए आशा की किरण बनें हैं मोदी सरकार में मानव संसाधन मन्त्रालय के राज्यमन्त्री पद पर आसीन प्रख्यात आर्य व्यक्तित्त्व डॉ.सत्यपालसिंहजी!

गत जनवरी माह में औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में पौराणिक बन्धुओं द्वारा आयोजित वैदिक सम्मेलन में डॉ.सत्यपालसिंहजी आमन्त्रित थे। इसमें उन्होंने वैदिक शिक्षाओं का पुरजोर समर्थन कर वेद का अध्ययन-अध्यापन विद्यालयों में करने की बात कही । साथ ही चार्ल्स डार्विन के क्रमिक विकासवाद का जोरदार खण्डन करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा कि, 'हमारे पूर्वज बन्दर नहीं, अपितु मनुष्य ही थे। हम

बन्दर के वंशज हैं, यह गलत पाठ विद्यालयों में पढाकर हम बच्चों को मानसिक दृष्टि से विकलांग बना रहे हैं।' डॉ.सत्यपालसिंहजी के इस वक्तव्य पर तब बहुत बडा बवाल खडा हुआ। विज्ञानजगत् में खलबली मच गयी। इस वक्तव्य के विरोध में मिडियावालों ने हायतौबा कर दी। मराठी समाचार पत्रों ने तो सम्पादकीय लेखों में डॉ.सत्यपालसिंह के विरुद्ध अनर्गल प्रलाप किया और यहां तक कि उन्हें मनुवादी कहकर उनका मजाक तक उडाया। अगले ही दिन देश के सौ से अधिक वैज्ञानिकों ने उपरोक्त मन्तव्य का खण्डन कर डार्विन.के सिद्धान्त को पूरी तरह से उचित बताया। यह तो होना ही था, क्योंकि प्रचलित व्यवस्था जिस डगर पर खडी है, उसे वैदिक संस्कृति के मूल्यों पर कतई विश्वास नहीं है। उन्हें पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित व संशोधित भौतिक जडवस्तुओं के सिद्धान्त मान्य हैं, किन्तु हमारे प्राचीन ऋषियों, दार्शनिकों व तत्त्वचिन्तकों द्वारा स्वानुभूत आध्यात्मिक चेतन तत्त्वों के सिद्धान्त बिल्कुल मान्य नहीं है। इसीलिए डॉ.सत्यपालसिंहजी के वक्तव्य का विरोध चहुं ओर से हुआ। आश्चर्य तो इस बात का कि जैसे ही श्री सिंहजी ने वेद व वैदिक सिद्धान्तों के समर्थन में अपनी बात रखी और मिडियावालों ने इसका जमकर विरोध किया, तब इनके समर्थन में न तो कोई हिन्दू नेता खडा हुआ और न ही उस वैदिक सम्मेलन के संयोजक व उपस्थित विद्वान! दुर्भाग्य की बात यह कि सम्मेलन में उपस्थित एक शंकराचार्य ने तो विद्यालयों में वेद पढाने की बात का भी विरोध किया।

जब सर्वत्र यह चर्चा चली तब हिन्दू राष्ट्र, राम मन्दिर, गौरक्षा आदि विषयों को लेकर सदैव भडकानेवाले वक्तव्य देनेवाले संघपरिवार व अन्य हिन्दुवादी संगठनों के नेता व प्रवक्ता भी सत्यपालजी के साथ खडे नहीं हुए। यहाँ तक कि काले धन के विरोध में आवाज उठानेवाले योग व आयुर्वेद के प्रसारक बाबा रामदेवजी ने भी इस विषय में कुछ नहीं कहा। गौरतलब बात यह कि मानवसंसाधन मन्त्री श्री प्रकाश जावडेकर ने तो अपने सहयोगी डॉ.सत्यपालसिंहजी का समर्थन करना तो दूर, उल्टा उन्हें शांत रहने की सलाह दी। इससे यह सिद्ध होता है कि, वेद के पक्ष में कोई यथार्थ व चिंतनात्मक दृष्टिकोन सामने रखता हो, तो इस विषय में किसी को कोई लेना-देना नहीं है। पुलिस कमिश्नर जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर बडे ही प्रामाणिक रूप से सेवा देनेवाले एक वेदज्ञ तत्त्वचिंतक जब राजनीति में प्रवेश कर भारतीय संस्कृति के मूल्यों व सिद्धान्तों की बात करता हो, तो उसपर विचार करना छोड, उसका विरोध किया जाता हो और उनका समर्थन भी कोई न करता हो, तो इससे बढकर दुःख का विषय और क्या हो सकता है?

- नयनकुमार आचार्य

अंगिरसातिरात्र, छन्दोगपमानतिरात्र, शतातिरात्र, त्रयदेशराम, दशरात्र आदि श्रौत यज्ञ हैं। अनेक यज्ञों के नाम तो शिलालेखों के खण्डित हो जाने से नष्ट हो गए हैं।

इन यज्ञों के समय ऋत्विक पुरोहितों को गाय, हाथी, घोडे, रथ, कार्षापण, सोने-चाँदी के अलंकार दान में दिये जाने का उल्लेख है। जिसमें एक हजार से बीस हजार तक कार्षापण, सौ से दस हजार तक गाय, सैकडों घोडे, अनेक हाथी, गाँव और वस्त्र आदि का समावेश है। उपरोक्त यज्ञों में राजसूय और अश्वमेध यज्ञ राजनीतिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण थे। दो अश्वमेधों का उल्लेख है। उस समय यह संकेत था कि वर्ष में दस से बीस लक्ष कार्षापण कर सम्भार प्राप्त करनेवाले राजा को ही राजसूय यज्ञ करना चाहिए और पचास लाख से एक कोटि कार्षापण प्राप्त करनेवाले राजा को ही अश्वमेध यज्ञ करने का अधिकार है। पहले राजसूय यज्ञ में यह सिद्ध करना होता था कि, 'हम अभिषिक्त राजा हैं और प्रजा की हमें मान्यता हैं, तो दूसरे अश्वमेध यज्ञ में यह प्रमाणित करना होता था कि, 'हम बलाढ्य शत्रु को पराजित करनेवाले विजयी सम्राट हैं।' उपरोक्त शिलालेखों से हमें तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का गहराई से परिचय मिलता है। इससे यह भी पुनः एक बार सिद्ध होता है कि प्राचीनकाल में स्त्रियों को वेदाधिकार और यज्ञाधिकार भी प्राप्त था और स्त्रियाँ सुशिक्षिता और विदुषी हुआ करती थी।

इसवी सन १६५७ में शिवाजी ने जुन्नर पर आक्रमण कर ३,००,००० स्वर्ण मुद्राएँ, २०० अश्व, महार्घ वस्त्र और अन्य मूल्यवान सामग्री प्राप्त की थी, परन्तु वे जुन्नर व शिवनेरी पर पूर्णतया विजय हासिल नहीं कर पाए। सन् १६७० में जुन्नर और शिवनेरी पर फिर उन्होंने आक्रमण किया, पर वे अयशस्वी रहे। फिर एक बार सन् १६७५ में शिवाजी ने अपनी जन्मस्थली शिवनेरी पर आक्रमण किया, पर वह भी असफल हुआ। '**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।**' इसे दुर्दैव ही माना जायेगा कि छत्रपति शिवाजी महाराज (१६३०-१६८०) जिन्होंने तोरणा, राजगढ, सिंहगढ (कोंढाणा), पुरन्दर आदि दुर्गों पर विजय हासिल की थी, वे अपने जन्म स्थान शिवनेरी दुर्ग को अपने जीवन के अन्त तक जीत नहीं पाये।

महर्षि दयानन्द अपने गौरवशाली इतिहास और ऐतिहासिक राष्ट्रीय महापुरुषों पर अनन्य श्रद्धा रखते थे। उनके पुणे प्रवचनों में पन्द्रह में से पाँच व्याख्यान तो इतिहास पर ही हैं, जो २४, २५, २६, २७, २९ और ३१ जुलाई १८७५ को दिये गए थे। पुणे में तांबडी जोगेश्वरी मंदिर

से संलग्न भिडेवाडे में सम्पन्न उनके व्याख्यानों में इतिहास विषयक व्याख्यानों की संख्या सर्वाधिक है। डॉ.भवानीलाल भारतीय के अनुसार - 'स्वामी दयानन्द भारतीय इतिहास के तटस्थ विश्लेषण की क्षमता रखते थे।' (नवजागरण के पुरोधा-दयानन्द सरस्वती, पृष्ठ २५४) महामहोपाध्याय पं.युधिष्ठिर मीमांसक के मतानुसार - 'ऋषि दयानन्द की धारणा थक कि - महाराज स्वायंभुव मनु से लेकर महाराज युधिष्ठिर पर्यंत का इतिहास महाभारत आदि में लिखा है। अत: आगे का इतिहास सुरक्षित रखने की भावना से उन्होंने महाराज युधिष्ठिर से लेके महाराज यशपाल पर्यन्त की वंशावली सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास के अन्त में उद्धृत की है। साथ ही यह अपेक्षा भी कि है कि - 'हमारे आर्य सज्जन लोग इतिहास और विद्यापुस्तकों का खोज कर प्रकाश करेंगें, तो देश को बडा ही लाभ पहुँचेगा।'

पं.युधिष्ठिरजी मीमांसक के अनुसार - इतिहास अन्वेषण की दिशा में प्रो.रामदेवजी और श्री पं.भगवदत्तजी के अतिरिक्त अन्य आर्य विद्वानों ने सदा उपेक्षा की है। (सत्यार्थप्रकाश-सम्पादक-युधिष्ठिर मीमांसक, पृष्ठ-५९९) पंजाब केसरी लाला लाजपतरायजी और पं.भीमसेनजी विद्यालंकार ने छत्रपति शिवाजी के जीवन चरित्र लिखे हैं। इतिहासवेत्ता प्रा.राजेन्द्रजी जिज्ञासु ने भी 'शिवाजी का राज्याभिषेक' नामक एक लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण पुस्तिका लिखी है। डॉ.य.दि.फडके के शब्दों में 'आर्यसमाजी चिंतक, प्रकाण्ड विद्वान तथा महान् इतिहासकार डॉ.बालकृष्ण ने छत्रपति शिवाजी महाराजजी का अंग्रेजी में 'शिवाजी दि ग्रेट' नाम से चाचर खण्डों में विस्तृत जीवन चरित्र लिखा है, जो महाराष्ट्र के इतिहास लेखन क्षेत्र में बहुत बडा योगदान माना जाता है।' (राजर्षी शाहू छत्रपती-एक मागोवा-सुमेरु प्रकाशन)

असाधारण- अद्भुत शक्ति हासिल हो जाने के बाद जब पक्षपात, अहंकार और अन्याय बढ जाता है, तब उसकी अनिवार्य रूप से होनेवाली परिणती को समझाते हुए महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में छत्रपति शिवाजी और गुरु गोविन्दसिंहजी का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए लिखते हैं, **"जब युद्ध विभाग में युद्ध विद्या कौशल और सेना इतनी बढे कि जिसका सामना करनेवाला भूगोल में दूसरा न हो, तब उन लोगों में पक्षपात, अभिमान बढकर अन्याय बढ जाता है। जब ये दोष हो जाते हैं, तब आपस में विरोध होकर अथवा उनसे अधिक दूसरे छोटे कुलों में ऐसा कोई समर्थ पुरुष खडा होता है कि उनका पराजय करने में समर्थ होवे। जैसे मुसलमानों**

की बादशाही के सामने शिवाजी और गोविन्दसिंहजी ने खडे होकर **मुसलमानों के राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया।''**(सत्यार्थप्रकाश-एकादश सम्मुलास)

इसी प्रकार तत्कालीन राजपूताने में जब महर्षि इस्लाम का खण्डन कर रहे थे तो कहा गया कि - 'मुगल शासन काल में आप इसी प्रकार खण्डन करते, तो उसके परिणाम भयंकर होते।' इस कथन पर महर्षि दयानन्दजी ने जो प्रतिक्रिया व्यक्त की, वह महर्षि के जीवनी लेखक डॉ.भवानीलाल भारतीय के शब्दों में प्रस्तुत है - 'जोधपुर निवास काल में... जोधपुर राज्य के मुसाहिब(मन्त्री) भैया फैजुल्ला खाँ दो-तीन बार स्वामीजी से मिले। मियाँ साहब राज्य के प्रमुख पद पर प्रतिष्ठित थे तथा सारा शासन तन्त्र उनकी ऊँगलियों के संकेत से संचालित होता था। जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के वे पूर्ण कृपापात्र थे। अतः राज्य के अन्य जागीरदार तथा सरदार भी मियाँ साहब के कृपा के आकांक्षी रहते थे। अपने व्याख्यान में एक बार जब महाराज ने इस्लाम की अनेक अवैज्ञानिक तथा तर्कहीन बातों का उग्र खण्डन किया तो... एक दिन वार्तालाप के प्रसंग में मियाँ साहब ने कहा कि 'यदि आज मुसलमानों का शासन होता, तो आपे इस्लाम खण्डन को कदापि सहन नहीं किया जाता और आपका इस प्रकार का भाषण करना कठिन हो जाता।' (तो इस पर) निर्भीकमना दयानन्द का उत्तर था - **'मैं यदि मुसलमान शासनकाल में होता, तब भी इसी प्रकार की बात कहता और यदि कोई औरंगजेब की परम्परा का शासक मेरा अनिष्ट चिन्तन करता, तो मैं किसी(छत्रपति) शिवाजी, दुर्गादास(राठौर) अथवा राजसिंह जैसे क्षत्रिय को आगे कर देता, जो उसे मजा चखा देता।'**(नवजागरण के पुरोधा)

***

(पुनर्प्रकाशित)

वेदोद्धारक, विश्ववन्द्य महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा
सन् १८७५ में संस्थापित विश्वकल्याणकारी सर्वश्रेष्ठ संगठन
आर्य समाज के १४३ वें स्थापना दिवस पर तथा
'भारतीय नववर्ष (गुडीपाडवा) चैत्र प्रतिपदा'(१८ मार्च)
इस पावन पर्व पर सभी देशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं व अभिनन्दन !
नया वर्ष आर्यों को नये शुभ संकल्प के लिए प्रेरणा देवें !

होलिका व प्रह्लाद की वास्तविकता

– डॉ.गंगाशरण आर्य(दिल्ली)

होली भारत के प्रसिद्ध त्यौहारों में से एक है । होली के विषय में प्रचलित कथा (पद्मपुराण–उत्तर खण्ड अ.२३८ श्लोक ३२) के अनुसार एक हिरण्यकशपु नामक नास्तिक दैत्य हुआ करता था। उसकी बहन का नाम होलिका था, जिसे वरदान था कि वह आग में नहीं जलेगी। हिरण्यकश्यपु का पुत्र प्रह्लाद आस्तिक, ईश्वर भक्त था। वह विष्णु का उपासक था और हिरण्यकश्यपु शिव का उपासक था। प्रह्लाद को हिरण्यकश्यपु त्रिलोचन शिव की पूजा करने और विष्णु को शत्रु बताकर उसकी भक्ति न करने के लिए कहते थे । परन्तु प्रह्लाद कहता था – **'कथं पाखण्डमाश्रित्य पूजयामि च शंकरम् ।'** अर्थात् मैं पाखण्ड का आश्रय लेकर शंकर की पूजा क्यों करु? मैं तो विष्णु की ही पूजा करूंगा। (पद्मपुराण उतरखण्ड श्लोक ४५) हिरण्यकश्यपु को अपने और अपने पुत्र के बीच की यह विषमता खटक रही थी इसीलिए उसने अपनी बहन होलिका से उसे गोद में लेकर आग में बैठने को कहा वह आग में बैठ गई ओर इस प्रकार होलिका जल गई और विष्णु का भक्त होने से प्रह्लाद बच गया। होलिका की स्मृति में होली का त्यौहार प्रतिवर्ष मनाया जाता है,जो कि नितान्त मिथ्या व मनघडण्त है।

यदि यह कथा सत्य है, तो बताओं कि यदि होलिका अग्नि से न जलने का वरदान प्राप्त था, 'तो फिर भी वह जल क्यों जाती है?इससे पूर्व हिरण्यकश्यपु को अपने पुत्र को इस प्रकार छल, कपट से मारने की क्या आवश्यकता थी? वह तो निर्मम तानाशाह था। वह स्वयं उनकी हत्या कर सकता था अथवा करा सकता था। अतः घटनाक्रम जिस प्रकार मोड लेता है और फिर उसे होलिकोत्सव से जोडकर देखने के लिए हमें प्रेरित और विवश किया जाता है, वह न तो विश्वसनीय है और ना ही सत्य है। यह बात मिथ्या ही नहीं असम्भव भी है कि होलिका अग्नि में जल गई और प्रह्लाद बच गया। क्योंकि अग्नि ऐसा तत्त्व है जिसका स्वभाविक गुण ही जलाना है अर्थात् अग्नि का धर्म जलाना है। उसमें जलने के लिए कोई भी बैठ जाए, चाहे वह अस्तिक हो अथवा नास्तिक क्रूर हो अथवा दयावान, वरदानी हो अथवा अभिशापी और चाहे होलिका हो अथवा प्रल्हाद! अग्नि का धर्म जलाना है तो वह

तो जलाएगी ही। वह कभी अपने धर्म को नहीं छोडती। और भी अग्नि जड होने से यह नहीं जानती कि प्रह्लाद आस्तिक है इसे न जलाऊं। जिस प्रकार सूर्य जड होने से अपना प्रकाश सम्पूर्ण संसार के जीवों को समान रूप से देता है। इसी प्रकार अग्नि भी कभी अपने धर्म से नहीं गिरती। चलो, यदि मान भी ले कि प्रह्लाद बच गए और होलिका जल गई! तो यह विचार करने की बात है कि भक्त प्रह्लाद को होलिका द्वारा जलाने का प्रयास गलत था या सही। यदि ग़लत था तो होलिका को माता क्यों कहते हैं और उसकी जय क्यों बोलते है? यदि जय ही बोलनी है तो महाराणी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना की जय बोलो जिसेन देश, धर्महित बलिदान दिया। इसके अलावा उस माता की पूजा अथवा सत्कार करो, जय बोलो जिसने अनेक कष्ट सह करके तुम्हे जन्म दिया। स्वयं गीले में सोकर तुम्हें सूखे में सुलाया और तुम्हारा पालन पोषण किया। भला होलिका ने तुम्हारे लिए क्या किया? किया तो सिर्फ अपने भतीजे प्रह्लाद को जलाने का प्रयांस। फिर उसकी जयघोष क्यों? तुम्हारे बाप, दादा, परदादा इत्यादि मरने पर उस स्थान का नाम स्मशान है। जहाँ होलिका जलकर भस्म हुई थी, वह स्थान भी स्मशान हुआ तो आप लोग कभी स्मशान में अपने मरे हुए बाप-दादा इत्यादि की स्मृति में तो परिक्रमा देने नहीं गए उनकी तो कभी जयघोष नहीं की जबकि तुम्हारा पालन-पोषण किया, शिक्षा-दीक्षा में हर प्रकार प्रयास किया, तुम्हारा निर्माण किया, धन-सम्पत्ति तुम्हारे लिए छोड गए तब भी स्मशान में कभी उनके लिए परिक्रमा व जयघोष नहीं करने गए तो होलिका ने तो तुम्हारे लिए किसी भी प्रकार का कोई सहयोग नहीं किया। फिर उसकी परिक्रमा व जयघोष क्यों करते हो ?

किसी भी अनाज के ऊपर की पर्त को **होलिका** कहते है। जैसे चना, मटर, गेहूँ, जौ की गिद्दी की उपर वाली पर्त। इसी प्रकार चना, गेहूँ, मटर जौ की गिद्दी(गिरी) को **प्रह्लाद** कहते हैं। होलिका को माता इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह चना इत्यादि का निर्माण व रक्षा करती है। यदि यह पर्त अर्थात् होलिका न हो तो चना मटर रूपी प्रह्लाद का जन्म नहीं हो सकता और भी जिस प्रकार माँ अपने बच्चे को किसी भी आपत्ति से बचा लेती है और यदि अग्नि में जलना भी पडे तो बच्चे को बचाकर स्वयं को आहुत करने के लिए तत्पर हो जाती है। इसी प्रकार चना, मटर जौ व गेहुँ जब अग्नि में भुनते हैं तो वह होलिका अर्थात् गेहुँ व जौ इत्यादि की ऊपरी खोल पहले जलता है और अंदर की गिरी सुरक्षित रहती है अर्थात् प्रह्लाद बच जाता है। उस समय प्रसन्नता से उस माता की जयघोष की जाती हे। अतः प्रल्हाद रूपी गिरी को बचाकर अपने को आहुत करने का कारण होलिका को माता कहा जाता है।(संपादित अंश)

* सभांतर्गत आर्य समाजों को सूचना *

दशांश शुल्क, प्रतिनिधि सूची व उनके शुल्क भेजें

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन आगामी मई २०१८ में होने की संभावना है। इसके लिए -

१) सभा के अंतर्गत आनेवाली राज्य की सभी आर्य समाजें अपनी-अपनी आर्यसमाजों के निर्वाचन तुरन्त करें और पदाधिकारियों व सभा प्रतिनिधियों की सूचि सभा को भेजें।

२) सभी आर्यसमाजें अपनी समाजों के दशांश शुल्क (पहले से लेकर आजतक के) यथाशीघ्र सभा की ओर भेजे।

* दशांत शुल्क सभा के भारतीय स्टेट बैंक परली शाखा के खाता क्र.11154152843(IFSC Code- SBIN0003406) में जमा करे व इसकी सूचना सभा को देवें। प्रतिनिधि व उनके शुल्क इस तरह होंगें-

१)पहले ९ सदस्यों के लिए पहला प्रतिनिधि, शुल्क रू.१५/-

२) बाद के १५ सदस्यों के लिए दुसरा प्रतिनिधि, शुल्क रु.२०/-

३) तत्पश्चात के प्रत्येक २० सदस्यों के लिए तिसरा व चौथा प्रतिनिधि, शुल्क रू.३०/- अतः आप सभी निवेदन है कि, कृपया दशांश शुल्क, प्रतिनिधियों की सूची व उनके शुल्क यथाशीघ्र सभा की ओर भेजें। अधिक जानकारी के लिये सभा के व्यवस्थापक श्री रंगनाथरावजी तिवार (मो.९४२३४७२७९२) से सम्पर्क करें।

– सभामंत्री

सूचना- संस्कार शिबिरों का आयोजन करें

महाराष्ट्र की सभी आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि, वे आगामी ग्रीष्मकाल की छुट्टियों में अपने-अपने गाँव व शहरों में बच्चों के लिए 'मानवता संस्कार व आर्यवीर दल शिविरों' का आयोजन करें। जो समाजें संस्कार शिबिरों का आयोजन करना चाहती हैं, कृपया वे सभा से सम्पर्क करें !

– सभामन्त्री

म.आ.प्र.सभा,पू.गुरुजी के शिष्यवृन्द एवं समस्त आर्य जगत् की ओर से

असंख्य युवकों के नवनिर्माता व तपस्वी आर्य संन्यासी

पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी(हरिश्चंद्र गुरुजी)

जन्मशताब्दी महोत्सव

शनि. रवि. सोम. दि.२८, २९, ३० अप्रैल २०१८

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली-वै. जि.बीड

* नम्र आत्मनिवेदन *

राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य समझे जानेवाले विद्यार्थियों व युवकों के नवनिर्माण हेतु अपना सर्वस्व समर्पित करनेवाले महान् समाजसेवक, तपोमूर्ति, प्रेरक आर्य व्यक्तित्त्व **पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती**(हरिश्चंद्रजी गुरुजी) इस वर्ष अपने यशस्वी जीवन के सौ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस उपलक्ष्य में पू.स्वामीजी के प्रेरक जीवन व कार्यों का समुचित गौरव हो, इस उद्देश्य से समग्र आर्य जगत् की ओर से उनके 'जन्मशताब्दी महोत्सव' का आयोजन आगामी **दि.२८, २९ व ३० अप्रैल २०१८(शनि., रवि., सोम.)** को श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम परली-वै. में हो रहा है। इस तीनदिवसीय समारोह में आर्य जगत् के संन्यासी, विद्वान, नेतागण, पू.गुरुजी के शिष्य, कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता, आर्य भजनोपदेशक आदि पधार रहे हैं। समारोह के दौरान वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन, संमेलन, विद्वानों के व्याख्यान, परिसंवाद आदि कार्यक्रम भी होंगें। अन्तिम दिन(दि.३० अप्रैल) स्वामीजी का सभी की ओर से भव्य रूप में गौरव व अभिनन्दन किया जायेगा। साथ ही विशेषांक व ग्रन्थविमोचन, गुरुजी के माता-पिता व दादीजी का स्मृति गौरव तथा अन्य भी कार्यक्रम होंगे। साथ ही 'जातिप्रथा निर्मूलन सम्मेलन', 'मानवता संस्कार शिविर संवर्धन सम्मेलन', 'विद्वद् / कार्यकर्त्ता संगठन सम्मेलन', 'गुरुजी के शिष्यों का सम्मेलन', 'वानप्रस्थी सम्मेलन', 'शिष्यों का व्रतधारण सम्मेलन', ज्येष्ठ आर्य सेवक गौरव समारोह, गुरुकुल स्नातक संम्मेलन तथा विविध ग्रन्थ व गौरव विशेषांक विमोचन आदि कार्यक्रम भी होंगें।

अत: आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार उपस्थित रहकर कार्यक्रमों को सफल बनायें और पूर्णत: आर्थिक सहयोग देने की कृपा करें। समारोह के आयोजन हेतु आप सभी महानुभाव अपनी सहयोग धनराशियाँ सभा के परली-वैजनाथ स्थित भारतीय स्टैट बैंक के खाता क्र.11154152843 (आय.एफ.एस.सी. कोड क्र.SBIN0003406)में भेजकर आर्थिक सहयोग करें। साथ ही समारोह की सफलता के लिए सेवाएँ देने का कष्ट करें।

अन्धेरी (प.) मुम्बई में वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मुम्बई की आर्य समाज, अन्धेरी(पश्चिम) का ३१ वां वार्षिकोत्सव दि.२१ से २४ दिसम्बर २०१७ को उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस उपलक्ष्य में आयोजित २१ कुण्डीय चतुर्वेदशतक पारायण महायज्ञ के ब्रह्मापद को वैदिक विद्वान आचार्य श्री वागीशजी शर्मा ने विभूषित किया। इस यज्ञ में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के ब्रह्मचारिणियों ने वेदपाठ किया। चारों दिन यज्ञ के पश्चात् आचार्य वागीशजी ने विभिन्न विषयों पर मौलिक विचार रखें। प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं.प्रभाकर शर्मा की भजन प्रस्तुति हुई। वार्षिकोत्सव में विभिन्न सम्मेलन भी हुए।

आचार्य आनंद पुरुषार्थी के सान्निध्य में

९, १०, ११ मार्च को लातूर का वार्षिकोत्सव

लातूर की सुप्रसिद्ध आर्य समाज, गांधी चौक का ८३ वां वार्षिकोत्सव आगामी दि.९, १० व ११ मार्च २०१८(शुक्र, शनि, रविवार) हर्षोल्हासपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रमुख व्याख्याता के रूप में ओजस्वी युवा विद्वान व वैदिक प्रवक्ता श्री आचार्य आनन्दजी पुरुषार्थी (होशगाबाद-म.प्र.) पधार रहे हैं। साथ में आर्य भजनोपदेशक पं.श्री अजय आर्य(उ.प्र.) भी सम्मिलित हो रहे हैं।

वार्षिकोत्सव के दौरान प्रतिदिन प्रात: ८ से १०.३० के दौरान बृहद्यज्ञ, भजनसंगीत एवं धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन तथा रात्रि में ७.३० से ९.३० बजे तक भजन संगीत तथा समसामायिक विषयों पर व्याख्यान होंगें। श्री पुरुषार्थी अपने प्रभावशाली व्यक्तित्त्व व भावस्पर्शी वक्तव्य द्वारा श्रोताओं के हृदय तक वैदिक विचारों की सरिता प्रवाहित करने में अग्रणी हैं। अत: इस वार्षिकोत्सव में पधारकर विद्वानों के विचारों का लाभ उठाने का आवाहन आर्य समाज गांधी चौक लातूर के प्रधान एड.हरिश्चन्द्र पाटील, उपप्रधान ओमप्रकाश पाराशर, मंत्री चंद्रभानु परांडेकर, उपमन्त्री एड. धीरेन्द्र पाटिल, कोषाध्यक्ष अविनाश परांडेकर, बाबुराव तेरकर, धर्मवीर परांडेकर आदियों ने किया है ।

महाराष्ट्र आ.प्र.सभा की बैठक

दि.११ मार्च २०१८

१० बजे - अन्तरंग सदस्य बैठक

११.३० -सर्वसाधारण सदस्य बैठक

स्थान : आर्यसमाज, गांधीचौक,लातूर

अंतरंग व साधारण सदस्य उपस्थित रहे।

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९.
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश — परमेश्वरचाच आश्रय...!

न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन ।
इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ।।

जीव हा केवळ प्राण व अपान् या दोन शक्तींच्या आश्रयानेच जगत नाही. तर या दोन्हींना आश्रय देणारी आणखी एक शक्ती आहे, ज्याच्या आश्रयाने सर्व प्राणी जगतात. ती शक्ती म्हणजे ईश्वर होय. कारण परमेश्वरीय शक्तीमुळेच सर्व प्राणीजगतास जगण्याची प्रेरणा मिळते. (कठोपनिषद-२/२/५)

दयानंद वाणी — विदेशीयांकडून भारतीय संस्कृतीचा गौरव

जगामध्ये जेवढ्या विद्या व पंथ प्रचलित आहेत, त्या सर्वांचे मूळ आर्यावर्तातूनच तिकडे गेले आहे. यात मुळीच शंका नाही. पाहा! फ्रान्स देशातील पॅरिस शहरी राहणारे जॅकोलियट(गोलडस्टकर) साहेब आपल्या **'बायबल इन इंडिया'** या ग्रंथात लिहितात की, "आर्यावर्त्त हा देश सर्व विद्यांचे माहेरघर आणि चांगल्या गोष्टींचे भांडार आहे. येथूनच सर्व विद्या व पंथ पसरले आहेत." ते परमेश्वरास अशी प्रार्थना करतात की, "हे परमेश्वरा! पूर्वी आर्यावर्त्त देशाची जशी उन्नती झाली होती, तशी तू आमच्या देशाची कर." हे एका फ्रेंच पंडिताचे मत आहे. ते त्या ग्रंथात पाहावे.

याचप्रमाणे दाराशिकोह या राजपुत्राने(औरंगजेबाच्या भावाने) असेच मत ठामपणे व्यक्त केले होते की, 'संस्कृत भाषेत जेवढे ज्ञान आहे तेवढे दुसऱ्या कोणत्याही भाषेत नाही. या निर्णयावर मी येऊन पोचलो आहे.' त्याने उपनिषदाचे फारसीमध्ये भाषांतर केले आहे. त्या ग्रंथात तो लिहितो, "मी अरबी वगैरे भाषा शिकलो. परंतु माझ्या मनातील संदेह दूर झाला नाही व मला आनंद मिळाला नाही. परंतु जेंव्हा मी संस्कृत भाषा शिकलो आणि संस्कृत विद्येचे श्रवण केले, तेंव्हा माझ्या मनातील साऱ्या शंका नाहीशा होऊन मला खूप आनंद झाला."

(सत्यार्थप्रकाश-११वा समुल्लास)

जयंतीनिमित्त (०२ मार्च) विशेष...

व्यासंगी आर्य व्यक्तिमत्त्व - पं.उत्तममुनिजी

– डॉ.जनार्दन वाघमारे(ज्येष्ठ विचारवंत)

महात्मा उत्तममुनिजी हे महर्षी दयानंदांच्या वैदिक विचारांनी प्रेरित झालेले दिव्य व्यक्तिमत्त्व होते. वैदिक साहित्याचा त्यांनी जीवनभर सखोल असा अभ्यास केला. वैदिक तत्त्वज्ञान त्यांच्या मनन व चिंतनाचा विषय राहिला आहे. आर्य समाजाचा एक खंदा कार्यकर्त्ता आणि वैदिक तत्त्वज्ञानाचा एक व्यासंगी प्रचारक म्हणून त्यांनी लौकिक संपादन केला.

हैद्राबादच्या मुक्ती संग्रामात आर्य समाजाचा एक विशेष असा वाटा आहे. वास्तविक हा मुक्ती संग्राम आर्य समाजनेच प्रज्वलित केला. अनेक आर्य समाजी व्यक्तींनी ह्या संग्रामात उडी घेतली होती. पं.उत्तममुनींनी ह्या संग्रामात एका युद्धनिपुण सैनिकाप्रमाणे काम केले होते. निजामी राजवटीच्या विरुद्ध अनेकांबरोबर ते ही हिरीरिने लढले. याची आठवण आजच्या आर्य समाजी व्यक्तींनी करून घेणे आवश्यक आहे. हैद्राबाद राज्य स्वतंत्र झाल्यानंतर त्यांनी आर्य समाजाच्या व्यासपीठावरून वैदिक धर्म तत्त्वांचा प्रचार सुरु केला. आर्य समाजाचा एक प्रभावी प्रचारक म्हणून त्यांची एक विशेष प्रतिमा मराठवाड्याच्या जनमानसात रुजली होती. हिंदी आणि मराठी या दोन्ही भाषांवर त्यांचे प्रभुत्त्व होते. या दोन्ही भाषेतून त्यांनी आपले प्रचार कार्य केले. सर्वसामान्य माणसाला समजेल, उमजेल, अशा सोप्या पद्धतीने आपल्या विषयाचे निरुपण करण्यासाठी विलक्षण हतोटी त्यांच्याजवळ होती. त्यांच्या विचारांचा लाभ मराठवाड्यातील अनेक लोकांनी घेतला. त्यांचा ध्येयवाद अनेकांसाठी प्रेरक ठरलेला आहे. लातूर ही त्यांची कर्मभूमी! आर्योपदेशकाच्या कार्याबरोबरच त्यांनी अध्यापन कार्य देखील तेवढ्याच निष्ठेने केले. त्यांच्या अध्यापनाचा प्रमुख विषय 'नीतिशास्त्र' हा होता. त्यांनी अनेक तरुणांचा मानसपिंड घडवला आहे. त्यांच्या विचाराचा मी ही पण एक वाटेकरी आहे. लातूरच्या राजस्थान विद्यालयात त्यांनी आपले अध्यापन कार्य केले.

पू.मुनिजी एक सिद्धहस्त लेखक होते. त्यांनी आठ ते दहा पुस्तकांचे लेखन केले आहे. मराठी भाषेमध्ये त्यांनी मांडलेली वैदिक विचारसरणी लोकांना सहज समजत असे. ग्रंथ लेखनाबरोबरच त्यांचे कांही सैद्धान्तिक लेख वृत्तपत्रांमधून व आर्य समाजाच्या विविध पत्रिकांमधून प्रसिद्ध

झाले आहेत. सामाजिक व राजकीय समस्यांवर ते लिखाण करत व व्याख्याने देत असत.

पं.उत्तममुनिजी वृद्धापकाळाचे भान विसरून उत्साहाने प्रचार कार्य करीत. वानप्रस्थाश्रमाचा स्वीकार केल्यानंतर तर त्यांनी या कार्याला वाहूनच घेतलें होते. येलदरी(ता.अहमदपूर) या गावी त्यांनी आपला आश्रम थाटला होता. निसर्गरम्य अशा ठिकाणी त्यांनी आपली झोपडी थाटली होती. या झोपडीत सरस्वतीचा विहार होता. या ठिकाणी वैदिक तत्त्वज्ञान, पं.उत्तममुनिजी आणि सभोवतालचा निसर्ग यांचा सुरेख संवाद चाललेला असायचा. हा संवाद 'सत्यं-शिवं आणि सुंदरम्' चा होता. उत्तममुनिजी हे फार मोठ्या आत्मिक समाधानाचे धनी होते. त्यांनी आपल्या सर्व मुलां-मुलींना उच्च शिक्षण देऊन त्यांना जगाच्या पाठीवर स्वावलंबी, स्वाभिमानी व शीलसंपन्न जीवन जगण्यासाठी लायक बनविले. ही व्यक्ती जीवनभर चिंतामुक्त होती. कसल्याही सांसारिक पाशात ते अडकले नाहीत. उतार वयातील अनेक व्यक्तींना कोणत्या ना कोणत्या तरी प्रकारचे वैफल्य अस्वस्थ करीत असते. परंतु या व्यक्तीच्या मनात मात्र वैफल्याची भावना घर करु शकली नाही.

पं.उत्तममुनी हे संस्कृतीचे उपासक होते. मानवी संस्कृतीचा विकास ही एक प्रदीर्घ अशी प्रक्रिया आहे. त्या प्रक्रियेत प्रत्येक सुशिक्षित माणसाने आपला वाटा उचलावा, अशी उत्तममुनिजींची धारणा होती. मानवी संस्कृतीला तेज प्राप्त होते, ते अध्यात्मिक शक्तीतून. माणसाने भौतिक जीवन सुखी व समृद्ध झाले पाहिजे, यात काहीच शंका नाही. पण आध्यात्मिक जीवनाच्या विकासाशिवाय भौतिक जीवनाची समृद्धी भिकारी ठरते, नेमकी हीच भूमिका आर्य समाजाने घेतलेली आहे.

आत्मविश्वास हा भारतीय संस्कृतीचा मुख्य गाभा आहे. या विचारांचे शब्दांकन प्रथमत: वेदांतून झालेले आहे. वेदाचे खरे स्वरूप महर्षी दयानंदांनी भारतीय जनतेसमोर ठेवले आहे. आर्य समाजाची स्थापना करून त्यांनी या विचाराच्या प्रसाराला एक प्रभावी असे व्यासपीठ तयार करून दिले. त्याच बरोबर त्यांनी राष्ट्रवादाचा पाया भक्कम केला. स्वराज्य प्राप्त केल्याशिवाय भारताला राष्ट्र म्हणून अस्मिता मिळणार नाही, या विचारांचा पाठपुरावा स्वामीजींनी जीवनभर केला.

स्वामी दयानंदांच्या विचारांचे 'पसायदान' भारतीयांना मिळाले. ही खरोखरच भाग्याची गोष्ट आहे. स्वामीजींच्या विचारांचे प्रचार कार्य करण्यात अनेकांबरोबरच पं.उत्तममुनींनी देखील यात भर टाकली. पंडितजींचे जीवन

सर्वदृष्टीने परिपूर्ण होते. आर्य समाजाचे सिद्धांत टिकून रहावेत, असे त्यांना नेहमी वाटायचे. आर्य समाजाच्या भविष्याविषयीची चिंता अलीकडील काळात त्यांना सतावत असे. **'महर्षी दयानंदांनी प्रज्वलित केलेली वैदिक विचारांची पणती विझता कामा नये'**, असे ते अनेकदा कार्यकर्त्यासमोर बोलून दाखवत. येत्या होळीला पू.उत्तममुनिजींची ११३वी जयंती आहे. त्यानिमित्त मुनिजींच्या समाजकार्याचा वारसा जपण्यासाठी आपण कृतसंकल्प होऊ या. त्यांच्या स्वप्नांना साकार करण्याचा प्रयत्न करणे, ही मुनिजींना खरी श्रद्धांजली ठरेल.

–'आविष्कार', श्रमसाफल्य कॉलनी, लातूर

स्वामी दयानंदांचा पोवाडा

– शाहीर स्व.मनोहरराव को.देशमुख (होट्टलकर) (स्वातंत्र्य सैनिक)

।।१।।

ऐका ऐका आर्य बंधूंनो। आर्य वीरांनों देश बंधूंनो।
गातो मी आज पोवाड्याला। दयानंदांच्या कीर्तीला। वैदिक धर्म जय बोला।।
ज्यांनी करी घेऊन पताका । दाविला बाका । मार्ग तो ऐका
वैदिक धर्म आहे हो खास । मानव उद्धरण्या हमखास ।
दाविली वाट साऱ्या मानवास ।।
मानवाचा धर्म एकची । ध्वज एकची । ईश्वर एकची ।
ओ३म् हा मंत्र ज्यांनी दिधला। गायत्री मंत्र जपण्याला ।
सर्वांसम अधिकार बोला।।
चाल : चार वेद अनादि कालापासून होते।
पठणांचा अधिकार होता केवळ ब्राह्मणाते ।
वेदाला मागे टाकून पुराण पुढे येत।
दयानंद झाले नसते तर कुराण पुढे येत।।
जाणवे आणि शेंडीही राहत नव्हते ।
दाविला मार्ग हो ज्यांनी नमन तयाते ।।
धन्य धन्य ऋषि दयानंद । आनंदकंद । लंगोटबंद।
गातो मी त्यांच्या पोवाड्याला। जो बोले अभय असे बोला।
वैदिक धर्म जय बोला ।।

॥२॥

टंकारा ग्राम नगरीत । गुजरात प्रदेशात । बाळ जन्मत ।
मूळचे नाव मूलशंकर। मूर्तिपूजक होते कट्टर ।
शिवाचा म्हणून करी आदर ॥
एकादशी आणि उपवास । करी हमखास । नित्याची ध्यास।
महाशिवरात्र पुढे येई। आनंद मोल काही नाही ।
भेट ती खऱ्या शिवाची होई ॥
वडील सांगती आपुल्या मुलास । शिवरात्रीस मध्यरात्रीस ।
शिव प्रकटतो आज हमखास ।
म्हणून तू ठेव आज उपवास । ना तरी दर्शना ना तुम्हास ॥
चाल : उपवास करितो बाळ मूलशंकर ।
बघण्या खऱ्या शंकराला बाल तत्पर ।
झाली वेळ मध्यरात्रीची । बघण्या अधीर ।
झोपी जाती सर्वजण । जागे मूलशंकर ।
चाल : अवचित प्रकार एक घडला । उंदीर आले ते वेळा।
खेळू लागे पिंडीवर बोला । भक्षी प्रसाद तेथे ठेविलेला।
आश्चर्य वाटे बाळाला। जागे करून बोलतो वडिलाला।
'महादेव का हो झोपला? अजुनी तो नाही प्रकटला।'
मूषक त्यावरी आला। आनंदाने खेळू लागला।
परि स्तब्ध शंभू हा अबोला, आनंदाने खेळू लागला।
काय बोलावे बाळ मुलाला। सुचेना त्याच्या वडिलाला।
धमकावी बाप मुलाला। परि बाळ नाही थांबला ।
देवाचा महादेव भला। असमर्थ आत्मा रक्षणाला
तो कैसा महादेव बोला ।
लावण्या शोध देवाचा। खऱ्या महादेवाचा मूल निघाला।।जी।।

॥३॥

तत्काळ निघे बाहेर । मूलशंकर । मनामधि घोर ।
लागला खऱ्या शंकराचा। शोधण्या निघे एकलाचा।
घरी ना ठावे ठाव त्याचा ॥

शोधाशोध झाली बहु परि। गेला बहु दुरी । वनी डोंगरी।
थकूनी गेले सर्वजण। लागेना शोध येई परतून।
अंबा-शंकर मनी बहु खिन्न।।
एकवीस वर्षाचे वय। कधी ना ठाव। परि मनी भाव।
खरा ईश्वर कुठे आहे । दावीन जगताला पाहे ।
ध्यानीमनी एकची ध्यास आहे।।
चाल : १८४५ ज्येष्ठ मास तवा होता ।
बीहड वनामध्ये ब्रह्मचारी एक होता ।
सामले गावचा रहिवासी तो होता ।
घेतली दीक्षा अन् ब्रह्मचर्य आचरता ।
मूलशंकर जावून शुद्ध चैतन्य होता ।
संन्यास आश्रम घ्यावे मनामधी चिंता।
परि कोणी देईना दीक्षा वय हे पाहता ।
नर्मदाकाठी येई फिरता फिरता ।
पूर्णानंद साधूची भेट तिथे मग होता ।
मनोदय कळविले त्यांनी साधू महंता ।
परि साधू म्हणे हे वय नव्हे तुज आता ।
संन्यास धर्माची दीक्षा देण्या सांप्रता ।
परि ठाम निश्चय शुद्ध चैतन्य होता ।
पूर्णानंद करी आनंद । झाला आनंद । आनंदकंद ।
नाम धारण केले दयानंद । शुद्ध चैतन्याचे झाले 'दयानंद' ।
महर्षी कसे झाले दयानंद ।
पुढच्या चौकास येईल आनंद ।।
।।४।।
चाल : स्वामींनी भ्रमण सुरु केले। कित्येक साधू भेटले ।
परि साधू भोंदू निघाले। गुजरात प्रांत सोडले ।
बडोदा शहरामध्ये आले । नर्मदा काठी राहिले ।
अनेक मठ धुंडिले। हरिद्वार त्यांनी गाठीले ।
योगानंद योगी भेटले। योगविद्या ग्रहण केले।

जिज्ञासू वृत्ती घेतले। तंत्र मंत्र सर्व बघितले।
. परि मनी दु:खी बहु झाले। सत्य योग विद्या आणि
मोक्ष नाही गवसले।।
चाल: बदरी नारायण गेले। अलकनंदा ओलांडिले ।
द्रोणा सागरीही आले। मुक्तेश्वरीही पातले।
गंगातीरीही हिंडले। गढ मुक्तेश्वरीही आले।
तेथे कोणी ना भेटले। दक्षिणेतही निघाले।
नर्मदेच्या काठी आले। तीन वर्षे तळ ठोकले।
ठाकीले हो। त्यांनी एक योगी गाठिले।।
यमुनेच्या काठावरती । एक दण्डी होता राहत।
योग विद्या पारंगत । अंध होता जन्मजात। पूर्ण होता व्याकरणात
त्याची किती त्या प्रांतात। ऐकला दयानंदांनी।
नंदांनी हो योगविद्या अभिलाषुनी।
१८६० साल माहे नोव्हेंबर। मास कार्तिकाचा थोर।
यमुनेच्या तीरावर। मथुरा नगरी बहु सुंदर।
कीर्ती ऐकवली फार। आज डोळ्यांनी बघणार दयानंद स्वामी पातले।
पातले हो, विरजानंद स्वामी गाठीले।।
दण्डी होते बसलेले। दरवाजाही लावलेले। बाहेर कुणी ना दिसले।
मनी विचारही केले। परतावे कैसे बोले। काही वेळ थांबले।
दरवाजाला थाप हो दिली। 'कौन है?' प्रश्न ते आले ते आले हो।
'यही जानने मैं आया हूँ।' स्वामी बोलले।।
मार्मिक शब्द ऐकूनी। विरजानंदांनी।
ताडिले मनी। कुणी तरी योग्य व्यक्ती ही खास।
परवानगी दिली आत येण्यास। उपदेश दिला दयानंदास।।
जाण दिली खऱ्या धर्माची। वैदिक धर्माची। खऱ्या ईश्वराची।
ओ३म् हा मंत्र त्यांनी दिधला। स्थापावे आर्यसमाजाला।।
वैदिक धर्म जय बोला ।।जी।।

* * *

* माहितीस्तव खुलासा *

स्वामी श्रद्धानंदजींना दर महिन्याला पाच हजार

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे संरक्षक व श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम परळीचे मुख्याधिष्ठाता पू.स्वामी श्रद्धानंदजी(हरिश्चंद्र गुरुजी) यांच्या वयाला नुकतीच शंभर वर्षे पूर्ण झाली. या वृद्धापकालीन अवस्थेत इतरत्र न राहता किंवा कुठेही भ्रमण न करता त्यांनी आता याच गुरुकुलास केंद्र बनवून निवांतपणे इथे राहावे, त्यांची मनोभावे सेवासुश्रुषा केली जाईल, असा आग्रह गुरुकुलचे संचालक व आर्य समाज परळी-वै. च्या पदाधिकाऱ्यांनी धरला. पण त्यांनी त्यास नकार दिला. त्यावेळी ते म्हणाले 'मला एके ठिकाणी बसण्यात स्वारस्य नाही... शेवटच्या क्षणापर्यंत मी चालत-फिरत माझे **'विद्यार्थी घडविण्याचे कार्य'** करीत राहीन....! असंख्य यजमान विद्यार्थ्यांच्या घरी जाऊन त्यांना ईश्वरीय सत्य ज्ञानाची जाणीव-जागृती करण्याचे कार्य मी अखेरच्या क्षणापर्यंत करणार आहे', असेही स्वामीजींनी स्पष्ट केले. पू.गुरुजींची ही इच्छा जाणून आणि त्यांची वृद्धापवस्था ओळखून आर्य समाजाने गुरुकुल आश्रमातर्फे त्यांना दर महिन्याला ५ हजार रूपयांची सेवासहाय्यता मागील मे २०१७ पासून सुरु केली आहे. या निधीचा उपयोग पू.स्वामीजी प्रवास, सेवक, औषध इत्यादी करिता करीत आहेत.

मागील दोन-तीन वर्षांपासून कांहीजण गुरुकुल आर्यसमाज स्वामीजींना गुरुकुलात ठेऊन घेत नसल्याबद्दल व त्यांना मदत करीत नसल्याबद्दल विनाकारण गैरसमज निर्माण करीत आहेत. त्यांनी याबाबत वस्तुस्थिती लक्षात घ्यावी, असे आवाहन परळीच्या आर्य समाज गुरुकुलातर्फे करण्यात आले आहे.

माहितीस्तव स्वामीजींकडून खुलासा →

महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा व पदाधिकाऱ्यांनी
आणि परळी येथील आर्य समाजाच्या
कार्यकर्त्यांनी माझी गुरुकुल मध्ये
राहण्याची पूर्णपणे व्यवस्था केली होती.
तसा आग्रह ही केला होता. पण मला
ईश्वरीय कार्यासाठी (गावोगावी) जावे लागते.
त्यामुळे मी परळी गुरुकुलात
राहू शकत नाही.
इतर कोणीही भ्रम किंवा
गैरसमज पसरवू नये...
नित्यभासाठी सहयोगी सेवकाकारिता रु.५०००/- महिना खर्च
मे २०१७ पासून दिले जात आहेत. आपला
स्वामी श्रद्धानंद.
(मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल)

स्वा.सै.श्रीमती बाजुळगे यांची शताब्दी साजरी

होळी ता.औसा जि.लातूर येथील वयोवृद्ध आर्य कार्यकर्ते व हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामात सहभागी देशभक्त स्वा.सै.श्री श्रीपती बाजुळगे यांनी आपल्या वयाची शंभरी नुकतीच पूर्ण केली. यानिमित्त होळी येथे दि.२७ डिसेंबर २०१७ रोजी त्यांचा 'शताब्दी कार्यक्रम' पार पडला. पं.ज्ञानकुमार आर्य यांच्या पौरोहित्याखाली आयोजित "आयुष्कामेष्टी यज्ञा"त श्री बाजुळगे व कुटुंबीय सहभागी झाले. यज्ञानंतर मान्यवरांच्या उपस्थितीत शताब्दी कार्यक्रम पार पडला. बाजुळगे हे जुन्या पिढीतील एकनिष्ठ उत्साही आर्य समाजी कार्यकर्ते असून ठिकठिकाणी आयोजित कार्यक्रमास ते हजेरी लावतात. शतायुषी श्री बाजुळगे यांचे सभेतर्फे अभिनंदन व शुभेच्छा!

बिबराळ येथे वेदप्रचार कार्यक्रम

हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामकालीन **'आर्य समाज'** संस्था म्हणून ओळख असलेल्या बिबराळ (ता.शिरूर अनंतपाळ जि.लातूर) येथील आर्य समाजाचा पुनरूद्धार अलीकडेच करण्यात आला. येथील उत्साही आर्ययुवक श्री हनुमंतराव जाधव(पाटील) यांच्या प्रयत्नांमुळे येथे वेदप्रचाराचे कार्यक्रम नेहमीच होत असतात. अशातच गेल्या डिसेंबर महिन्यात शिवणखेड(बु.) ता.चाकुर येथील कार्यकर्त्यांनी तिथे जाऊन वैदिक धर्म प्रसाराचा कार्यक्रम घेतला. प्रारंभी पं.अशोकराव कातपुते यांच्या पौरोहित्याखाली यज्ञ संपन्न झाला. त्यानंतर विद्यासागर आरदवाड व विजयपाल कुल्ले यांनी भजने सादर केली. सर्वश्री बब्रुवाहन शिंदे, श्री कातपुरे, भागवतराव आरदवाड यांनी यावेळी आर्य सिद्धांतावर विचार मांडले. यावेळी तुकाराम आलापुरे, पंढरीनाथ चामे यांच्यासह गावातील प्रतिष्ठींत नागरिक उपस्थित होते.

रामनगर (लातूर) मध्ये अभिनव उपक्रम

आर्य साप्ताहिक व विशेष सत्संगांमध्ये श्रोत्यांची संख्या वाढावी व वेदप्रचार कार्यास गती मिळावी, या उद्देश्याने रामनगर (लातूर) येथील आर्य समाजाने आपल्या सदस्यांचे वाढदिवस साजरे करून त्यांना प्रोत्साहित करण्याचा अभिनव उपक्रम मागील तीन-चार महिन्यांपासून कार्यान्वित केला आहे. दर महिन्याच्या शेवटच्या रविवारी त्या-त्या महिन्यात ज्यांचे वाढदिवस असतात, अशा

परभणीत प्रधानपदी अग्रवाल तर मंत्रीपदी बिर्ला

परभणी येथील आर्यसमाजाचे त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन नुकतेच संपन्न झाले. प्रा.श्री शिवगीर गिरी यांच्या प्रमुख उपस्थितीत तर श्री कमलकिशोर अग्रवाल यांच्या अध्यक्षतेखाली पार पडलेल्या या अधिवेशनात पदाधिकाऱ्यांची निवड खेळीमेळीच्या वातावरणात करण्यात आली. यात प्रधानपदी ज्येष्ठ आर्य कार्यकर्ते श्री विजयकुमारजी अग्रवाल, तर मंत्रीपदी श्री बालकिशनजी बिर्ला यांना निवडण्यात आले. या अधिवेशनात आगामी तीन वर्षासाठी निवडण्यात आलेली कार्यकारिणी खालीलप्रमाणे आहे.

प्रधान– श्री विजयकुमारजी अग्रवाल
उपप्रधान–श्री गौरीशंकर अग्रवाल
उपप्रधान– श्री दयानंद शास्त्री
मंत्री–श्री बालकिशनजी बिर्ला
उपमंत्री–प्रा.श्री मधुकर पांचाळ,
श्री दिगंबर देवकते(शास्त्री)
कोषाध्यक्ष–डॉ.श्री धनंजय औंढेकर
सल्लागार–सर्वश्री शिवगीर गिरी, बाबुराव आर्य, कमलकिशोर अग्रवाल
संस्कार प्रमुख–पं.सुरेश शास्त्री(मुंडे),
व्यायाम प्रमुख–श्री विश्वजीत आर्य व श्री दत्ता बुलबुले
महिला प्रधान – सौ.लीलावती जगदाळे,
महिला प्रतिनिधी–सौ.मंगल आर्य, सौ.संगीता बिर्ला, सौ.संध्या औंढेकर, सौ.कांचन देवकते, सौ.राधा अग्रवाल, सौ.सुनंदा मुंढे
सभा प्रतिनिधी – सर्वश्री विजयकुमार अग्रवाल, बालकिशनजी बिर्ला, डॉ.धनंजय औंढेकर व सौ.लिलावती जगदाळे
नव्या कार्यकारिणीचे हार्दिक अभिनंदन!

सोलापुरात मांसाहार विषयावर वक्तृत्त्व स्पर्धा संपन्न

आर्य समाज सोलापूर च्या संयोजनाखाली श्री म.आ.बिराजदार यांच्या गौरवार्थ दि.२९ जानेवारी रोजी श्री राजलिंगेश्वर महाविद्यालय, तीर्थ ता.दक्षिण सोलापूर येथे विद्यालयीन पातळीवर वक्तृत्त्व स्पर्धा घेण्यात आली. या स्पर्धेत जवळपास ४ शाळांच्या विद्यार्थ्यांनी सहभाग नोंदविला. 'मांसाहार का नको?' या विषयावर आयोजित या स्पर्धेत कु.ऐश्वर्या जेऊरे (लालबहादुर प्रशाला दिंडुर) हिने प्रथम, कु.संजीवनी माने व कु.मानसी अटंद (शंकरलिंग प्रशाला वळसंग) या दोघींनी अनुक्रमे द्वितीय व तृतीय पुरस्कार मिळविले. तर कु.धनश्री सवामी व कु.पूजा यांना उत्तेजनार्थ पारितोषिके देण्यात आली. श्री उत्तम मुनिजी व देविदासराव उकिरडे यांच्या पुर्ण सहकार्याने या स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते.

ज्येष्ठ आर्यसेवक स्मृति स्मारक व गौरवभेट कार्यक्रम

* नम्र निवेदन *

महाराष्ट्र प्रांतीय सभेअंतर्गत विविध भागातील आर्यसमाज कार्यकर्त्यांना कळविण्यात येते की, दरवर्षी सभेतर्फे ज्येष्ठ (दिवंगत)आर्यसेवकांचा स्मृतिस्मारक तर हयात असलेल्या ज्येष्ठ आर्यजनांचा गौरव समारंभ केला जातो. याही वर्षी परळी येथील गुरुकुलात दि.२८, २९, ३० एप्रिल दरम्यान पार पडणाऱ्या स्वामी श्रद्धानंद(हरिश्चंद्र गुरुजी) शताब्दी समारंभात 'ज्येष्ठ आर्य सेवक' स्मृति स्मारक व गौरव समारंभ आयोजित करण्यात आलेला आहे. तरी आपल्या परिसरातील जे दिवंगत झालेले अथवा हयात असलेले देशभक्त, स्वातंत्र्य सैनिक, पुरोहित, आर्यसिद्धांतवादी कार्यकर्ते, वेद प्रचारक, लेखक, सिद्धांतनिष्ठ आर्यजन असतील तर त्यांचा स्मृतिस्मारक व गौरव समारंभ आयोजित करण्यासाठी पुढाकार घ्यावा. त्यांच्या नावे भेट निधी(रू.११ हजार ते १ लाख पर्यंत) संकलित करून तो परळीतील कार्यक्रमात समारंभपूर्वक प्रदान करण्यासाठी तत्पर राहावे. याकरिता त्यांची नावे लवकरात लवकर सभेकडे पाठवावीत.

या भेटनिधीची सभेत स्थिरनिधी बनवून त्याद्वारे त्यांच्या स्मरणार्थ/ गौरवार्थ वेदप्रचाराचे कार्य केले जाईल. तरी त्या-त्या भागातील आर्य जनांनी सहकार्य करावे- **सभामंत्री**

निधनवार्ता...

श्रीमती मंगलबाई भोसीकर यांचे निधन

नांदेड येथील आर्य समाजाच्या कार्यकर्त्या श्रीमती मंगलबाई भगवानराव भोसीकर यांचे नुकतेच दुःखद निधन झाले. त्यांना आर्य समाज नांदेडच्या साप्ताहिक सत्संगात भावपूर्ण श्रद्धांजली अर्पण करण्यात आली. यावेळी प्राचार्य श्री देवदत्त तुंगार यांनी भोसीकर दांपत्यांने केलेल्या सामाजिक कार्याची व आर्य समाजाच्या प्रसारासाठी घेतलेल्या परिश्रमाची आठवण करून दिली. या श्रद्धांजली कार्यक्रमास प्रा.अवतारसिंग मिस्त्री, पो.नि.डॉ.संजय तुंगार, श्री यादव भांगे, श्री किरकन देशमुख आदी उपस्थित होते. त्यांना आर्यसमाजातर्फे श्रद्धांजली!

आर्य स्वा.सै.भीमराव बोंढारे यांचे निधन

हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामात सक्रिय सहभागी झालेले हिंगोली जिल्ह्याच्या आखाडा बाळापूर परिसरातील ज्येष्ठ आर्य समाजी कार्यकर्ते स्वा.सै.भीमरावजी संभाजी बोंढारे यांचे वयाच्या ९५ व्या वर्षी दि.२६ डिसेंबर २०१७ रोजी स.६.३० वा. दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी, मुले, मुली, पुतणे, नातवंडे असा परिवार आहे. मराठवाड्यातील ज्येष्ठ स्वा.सै.(स्व.) गोविंदभाई श्रॉफ, दीपाजी पाटील व इतरांसोबत राहुन श्री बोंढारे यांनी निजामाच्या अन्यायी राजवटीविरुद्ध आवाज उठविला व समाज जागृतीकरिता आर्य समाजाच्या माध्यमाने तरुणांची फळी उभी केली. देशाभिमान जागविण्याबरोबरच त्यांनी या परिसरात आर्य विचारांच्या प्रसाराकरिता विविध उपक्रम राबविले. शैक्षणिक व सामाजिक कार्यातही ते अग्रणी राहिले. आखाडा बाळापुर या आपल्या गावात आर्य समाजाची स्थापना करून त्यांनी वेदप्रचार घडवून आणला. या संस्थेचे ते अखेरपर्यंत प्रधान म्हणून कार्यरत होते. विशेष म्हणजे त्यांच्याच पुढाकाराने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या नावे एक प्लॉट व एक वास्तू दान करण्यात आली आहे. गावातील जनता व स्वातंत्र्य सैनिकांना ते नेहमीच मार्गदर्शन करीत. त्यांच्या प्रयत्नांनी गावात स्वातंत्र्य सैनिक भवन उभारून तिथे वाचनालयाची स्थापना करण्यात आली. अशा तळमळीच्या आर्य समाजी देशभक्ताच्या निधनाने या परिसराची हानी झाली आहे. एक जुना जाणता वयोवृद्ध प्रतिष्ठीत मार्गदर्शक हरपल्याची भावना येथील नागरिकांतून व्यक्त होत आहे.

दिवंगत स्वा.सै.बोंढारे यांच्या पार्थिवावर सर्वश्री पं.सोगाजी घुन्नर, बाबुराव काळे, धोंडिबा शिंदे यांनी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले. शासनाचे प्रतिनिधी म्हणून तहसीलदार डॉ.प्रतिभाताई गोरे, पोलीस उपनिरीक्षक सदानंद मेंडके यांनी दिवंगत स्वा.सै.बोंढारे यांना प्रशासनातर्फे श्रद्धांजली वाहिली. यावेळी जिल्ह्यातील विविध राजकीय पक्षांचे नेते, शैक्षणिक, सामाजिक, व्यापार-उद्योग, कृषी क्षेत्रातील जनसमुह मोठ्या संख्येने उपस्थित होता.त्यांना श्रद्धांजली!

आंतरजातीय विवाह,चळवळीच्या झुंजार कार्यकर्त्या

माता त्रिवेणीबाई लोखंडे कालवश

मानवनिर्मित जाती-पाती व मत-संप्रदाय(धर्म) यांच्या उतरंडीला आपल्या कृतिशील कार्यतत्परतेतून नेस्तनाबूत करण्याचे असिधाराव्रत जीवनभर मोठ्या निष्ठेने जोपासणाऱ्या जुन्या पीढीतील एक कट्टर आर्य समाजी महिला व रेणापूरच्या आंतरजातीय विवाह मंडळ-चळवळीच्या झुंजार कार्यकर्त्या श्रीमती त्रिवेणीबाई रामस्वरूप लोखंडे यांचे बुधवार दि.३१ जानेवारी २०१८ रोजी पहाटे अल्पशा आजाराने दुःखद निधन झाले. मृत्यूसमयी त्या ८६ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या पश्चात् दोन मुले, चार मुली, जावई, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे. दुर्दैवाने दोनच वर्षापूर्वी त्यांचे एक सुपुत्र श्री धर्मदीप यांचे अपघाती निधन झाले होते.

माता त्रिवेणीबाईंनी जीवनभर खडतर संघर्षाचा प्रवास केला. आपले कर्मठ पती रामस्वरूप लोखंडे यांच्या खांद्याला खांदा लावून सहकार्य केले. आंतरजातीय विवाह मंडळाचे कार्य असो किंवा अन्य कार्य, आर्य समाज कार्यास त्यांनी मोठी साथ दिली. रेणापुर सारख्या ग्रामीण भागात आर्य समाज चळवळ जोपासली. १९४८ मध्ये रझाकार व हिंदू यांच्यात संघर्ष झाला. त्यावेळी त्यांनी महिलांना संरक्षण दिले. आर्य समाज रेणापुरात ज्यावेळी उत्तर भारतातील विद्वान प्रचारास येत त्यावेळी त्या भोजनाची व राहण्याची सोय करीत. पती रामस्वरुपजी हे बाहेर गावी जात त्यावेळी त्या पिठाची गिरणी चालवून परिवाराची उपजीविका चालवित. त्यांची दोन्ही मुले चंद्रशेखर व धर्मदीप यांना गुरुकुलमध्ये पाठवून गुरुकुलचे स्नातक बनविले. तर आपल्या कुटूंबातील सर्व मुले व मुली तसेच नातु-नाती यांचे जातपात तोडून आंतरजातीय विवाह करण्यास प्रोत्साहन दिले. श्रीमती त्रिवेणीबाई अल्पशिक्षित असूनही त्यांची दूरदृष्टी, कार्य करण्याची पद्धत व सैद्धांतिक निष्ठा ही उच्च विद्याविभूषितांना लाजवणारी होती.आर्थिक दारिद्रय, पतीचे अकाली निधन, मुला-बाळांचे संगोपन आदी अनेक संकटे आली, तरी त्यांची पर्वा न करता प्रसंगी वज्रापेक्षाही कठोर, तर फुलापेक्षाही कोमल बनत त्यांनी आयुष्य कंठले. त्यांच्या पार्थिवावर वैदिकपद्धतीने अंत्यसंस्कार पार पडले.त्यांना आर्यसमाजातर्फे श्रद्धांजली!

- चिल्ले दम्पत्ती गौरव राज्य स्तरीय वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१७ -

रामनगर, लातूर आर्य समाज में आयोजित वक्तृत्त्व स्पर्धा का दीप जलाकर उद्घाटन।

प्रथम स्थान प्राप्त सुरेंद्र स्वामी को पुरस्कार प्रदान करते हुए सभा उपप्रधान राजेन्द्र दिवे, आर्य समाज के प्रधान श्री मोरे, मन्त्री लोखंडे व श्रीराम आर्य।

द्वितीय स्थान प्राप्त आकाश पाटील को पुरस्कार प्रदान करते हुए मान्यवर ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एवं शिष्यों द्वारा आयोजित

पू.स्वामी श्रद्धानन्द(हरिश्चंद्र गुरुजी) शताब्दी समारोह

दि.२८, २९ व ३० अप्रैल २०१८(शनि.,रवि., सोम.)

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली-वै. जि.बीड

* नम्र निवेदन *

सभी सज्जनों व माता-बहनों को विदित कराते हुए हर्ष हो रहा है कि, असंख्य छात्रों के नवनिर्माता एवं तपस्वी आर्य सन्यासी, समाजसेवक पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी) इस वर्ष अपने यशस्वी जीवन के सौ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी के जीवन व कार्यों का समुचित गौरव हो, इस उद्देश्य से समग्र आर्य जगत् की ओर से उनके **'जन्मशताब्दी समारोह'** का आयोजन हो रहा है। उपरोक्त तिथियों पर होनेवाले इस त्रिदिवसीय समारोह में आर्यजगत् के संन्यासी, विद्वान्, नेतागण, पू.गुरुजी के शिष्य तथा कर्मठ आर्यजन पधार रहे हैं।

समारोह के दौरान वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन, विविध संमेलन आदि कार्यक्रम होंगें। अन्तिम दिन ३० अप्रैल को स्वामीजी का सभी की ओर से भव्य गौरव किया जायेगा। साथ ही ग्रन्थ विमोचन, गुरुजी के दिवंगत माता-पिता व दादीजी का स्मृति सम्मान व अन्य कार्यक्रम होंगें। अतः इस समारोह में सभी आर्यजन, शिष्यगण एवं राष्ट्र व धर्मप्रेमी सज्जन सपरिवार पधारें। समारोह के आयोजन व सफलता हेतु आर्थिक सहयोग भी प्रदान करें।

विनीत : म.आ.प्र.सभा, गुरुजी के शिष्य, आर्य समाज परली तथा राज्य की सभी आर्य समाजें

REG.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-

सेवा में,
श्री ____________

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ [illegible] स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र) [illegible] स्थान से प्रकाशित किया।